ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

मवेशियों में लेप्टोस्पायरोसिस - इसका संचरण और प्रबंधन

प्रभजोत कौर[१], साक्षी[२]

[१]पशुचिकित्सा विभाग, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना, बिहार

[२]भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान इज़्ज़तनगर बरेली

लेप्टोस्पायरोसिस दुनिया भर में पाया जाता है । यह डेयरी और गोमांस मवेशियों में आम है। यह एक जीवाणु रोग है और मनुष्यों में भी फैलता है। यह मुख्य रूप से लेप्टोस्पाइरा बैक्टीरिया लेप्टोस्पाइरा इंटररोगेंस सेरोवर हार्डजो के कारण होता है। यह बैक्टीरिया गीली मिट्टी और स्थिर पानी में लंबे समय तक जीवित रह सकता है। लेप्टोस्पाइरा सूखने , सूरज की रोशनी के संपर्क में आने , 5.8 से नीचे पीएच और तापमान के चरम को बर्दाश्त नहीं करता है। पाश्चराइजेशन दूध में उत्सर्जित सभी लेप्टोस्पा यर को नष्ट कर देता है।

संचरण और प्रसार

- संक्रमित मूत्र या गर्भपात के उत्पादों के संपर्क मे आने से संक्रमण फैलता है।
- कुछ वन्यजीव प्रजातियां मवेशियों में भी संक्रमण फैला सकती हैं।
- संक्रमित मूत्र के साथ-साथ भोजन में भी बीमारी हो सकती है।
- बैलों की सहायक यौन ग्रंथियों में बैक्टीरिया होता है जिससे यौन संचारण होता है।
- तीव्र संक्रमण के लगभग 14 दिनों के बाद मूत्र में लेप्टोस्पाइरा का वृक्कीय बहाव होता है और यह महीनों तक जारी रह सकता है, रुक-रुक कर बहाव वर्षों तक हो सकता है
- संक्रमण श्लेष्म झिल्ली और त्वचा में प्रवेश के बाद होता है

जोखिम

- साझे बैलों का उपयोग करके खुले झुंड बनाना।
- भेड़ों के साथ मिश्रित चराई
- सामान्य जलमार्गों के साथ साझा चरागाह।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

- संक्रमित बैल के साथ प्राकृतिक सेवा का उपयोग।
- दूषित जल तक मवेशियों की पहुंच।
- संक्रमित मवेशियों की खरीद

नैदानिक प्रस्तुति-

- संवेदनशील गाय के संक्रमण के 2-7 दिन बाद दूध उत्पादन में अचानक गिरावट आती है।
- थन नरम और ढीला हो जाता है तथा हर तरफ कोलोस्ट्रम जैसा स्राव या खून मिला हुआ दूध आने लगता है।
- गायें सुस्त, अकड़नग्रस्त और बुखारग्रस्त हो जाती हैं तथा उनकी भूख भी कम हो जाती है।
- संक्रमण के 3-12 सप्ताह बाद गर्भपात हो सकता है। (अधिकतर अंतिम तिमाही में)
- कमजोर और समय से पहले जन्मे बछड़े पैदा हो सकते हैं।
- रक्ताल्पता

निदान

- सीरोलॉजी- एंटीबॉडी का पता लगाने के लिए रक्त परीक्षण।
- रक्त, मूत्र, ऊतकों से बैक्टीरिया का पृथक्करण।
- एंटीबॉडी के लिए दूध के नमूनों का परीक्षण।

प्रबंध

- खड़े पानी को निकालने या बाड़ लगाने से संक्रमण कम हो सकता है।
- शुष्क, स्वच्छ वातावरण बनाए रखने से भी जोखिम और संक्रमण को कम करने में मदद मिल सकती है।
- क्लिनिकल दूध गिरने के मामलों में एंटीबायोटिक उपचार की सिफारिश की जाती है ताकि उत्सर्जन और जूनोटिक जोखिम को कम किया जा सके। स्ट्रेप्टोमाइसिन का एक इंजेक्शन अधिकांश मवेशियों से संक्रमण को खत्म कर देगा। ऑक्सीटेट्रासाइक्लिन भी सहायक है।
- लेप्टोस्पाइरा का नियंत्रण सं क्रमण के जोखिम को कम करने के लिए प्रबंधन निर्णयों , एंटीबायोटिक उपचार और टीकाकरण के संयोजन पर निर्भर करता है।
- टीकाकरण के लिए 2 इंजेक्शन लगाने चाहिए जो कि 4 सप्ताह के अंतराल पर लगाए जाते हैं। इसके बाद वार्षिक अंतराल पर बूस्टर टीका लगाना चाहिए।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

- टीका दूध गिरने और गर्भपात से सुरक्षा करेगा। टीकाकरण के बाद वार्षिक बूस्टर आवश्यक होता है।
- बछियों मे प्रथम संभोग से पहले टीकाकरण अवश्य कराना चाहिए।

निष्कर्ष-

भारत में, लेप्टोस्पायरोसिस एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता है । सरकार और स्वास्थ्य संगठन द्वारा इस बीमारी को नियंत्रित करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। प्रजनन हानि , गर्भपात, बांझपन, दूध उत्पादन में कमी , जूनोटिक (हालांकि मनुष्यों में बीमारी का इलाज किया जा सकता है) जैसे आर्थिक नुकसान हो सकते हैं। समय पर उपचार से पशु की जान बचाई जा सकती है। यदि पर्याप्त निवारक उपाय किए जाएं, तो हम बीमारी के संक्रमण को रोक सकते हैं।